

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलॉजी, सत्र 18, मोक्ष, अनन्त जीवन

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 18 है, मोक्ष, अनन्त जीवन।

हम जोहानिन धर्मशास्त्र में अपने अध्ययन को जारी रखते हैं, जिसमें मोक्ष को अनन्त जीवन के रूप में देखा जाता है, जैसा कि चौथे सुसमाचार के कई विषयों के मामले में है।

अनन्त जीवन का परिचय प्रस्तावना में दिया गया है, आपने अनुमान लगा लिया होगा। आरंभ में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह आरंभ में परमेश्वर के साथ था।

सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कुछ भी उसके बिना उत्पन्न नहीं हुआ। उसी में जीवन था, और जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। ज्योति अंधकार में चमकती है, और अंधकार ने उस पर विजय नहीं पाई।

जॉन ने जीवन और प्रकाश के विषयों को आपस में जोड़ा है। मैं फिर से एंड्रियास कोस्टेनबर्गर की सराहना करता हूँ *जॉन के सुसमाचार और पत्रों का धर्मशास्त्र*; मुझे लगता है कि यही शीर्षक है। और उस अंतर्संबंध के बारे में अधिक जानने के लिए, लेकिन अभी, मैंने उन्हें अलग कर दिया है, और अब हम अनन्त जीवन पर चर्चा कर रहे हैं।

हमने यीशु को प्रकाश के रूप में चर्चा की, मैं कह रहा हूँ कि मैं दुनिया का प्रकाश हूँ। लोगोस में, वचन में, जीवन था। हर बार जब ज़ोए, ग्रीक शब्द ज़ोए, चौथे सुसमाचार में जीवन का उपयोग किया जाता है, तो यह अनन्त जीवन की बात करता है।

अनन्त जीवन वचन में था। यदि आप जानना चाहते हैं कि यह कहाँ रहता है, तो इसका स्थान वचन में है। वह जीवनदाता था, जैसा कि पद 3 में कहा गया है, सृजित जीवन के संदर्भ में।

सभी चीज़ें उसके द्वारा बनाई गई थीं, और यह एक व्यापक कथन है क्योंकि यह न केवल सकारात्मक की पुष्टि करता है बल्कि नकारात्मक को भी नकारता है। उसके बिना, जो कुछ भी बनाया गया है वह नहीं बनाया गया था। उसने सब कुछ बनाया।

वास्तव में, उसमें जीवन था। अनन्त जीवन का स्थान लोगोस में है। और लोगोस में वह अनन्त जीवन, सभी सृजित जीवन का स्रोत, श्लोक 3, मनुष्यों का प्रकाश था।

यह ईश्वर का रहस्योद्घाटन था, जो मानवजाति पर चमक रहा था। मनुष्य का एक उद्देश्यपूर्ण संबंधकारक है। प्रकाश एक क्रिया संज्ञा है।

प्रकाश फैलता है, मानवजाति को प्रकाशित करता है और चमकता है। अर्थात्, वचन सामान्य प्रकाशन का लेखक है। परमेश्वर ने जो चीज़ें बनाई हैं, वे उसके निर्माता होने की गवाही देती हैं।

खास तौर पर, सृष्टि में पुत्र पिता का प्रतिनिधि था। यह न केवल यूहन्ना 1:3 और 4 में सिखाया गया है, बल्कि कुलुस्सियों 1 और इब्रानियों 1 में भी बताया गया है। अनन्त जीवन पुत्र में था।

यह श्लोक मोक्ष की बात नहीं करता। यह सृजन की बात करता है। और उस सृजन का स्रोत शाश्वत है।

सभी सृजित जीवन का स्रोत जीवन था। परमेश्वर के वचन में अनन्त जीवन। त्रिदेव का दूसरा व्यक्ति।

पुत्र, प्रकाश, वचन। तो, बेशक, जब प्रकाश दुनिया में आता है, तो वह परमेश्वर को प्रकट करना जारी रखता है। लेकिन अब, उद्धार करते हुए, वह पापियों को प्रकाशित करता है।

यूहन्ना 3, 14 और उसके बाद। जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया। हमने पहले भी इस पर विचार किया है।

गिनती 21. जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया था, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना चाहिए, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, उसे अनन्त जीवन मिले। यहाँ जो कोई भी चाहेगा वाला अंश दिया गया है, जो कालक्रमिक, पुरातन है।

जो कोई भी उस पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन मिलता है। यह अनन्त जीवन परमेश्वर का जीवन है जो अंधकार में रहने वालों को दिया जाता है। परमेश्वर के अज्ञान के अंधकार में, पाप के अंधकार में।

जब परमेश्वर उन्हें बचाकर प्रकाशित करता है, तो अंधकार की जगह प्रकाश आ जाता है। अज्ञान ज्ञान बन जाता है। पाप पवित्रता बन जाता है।

पुत्र पर विश्वास करने से अनन्त जीवन प्राप्त होता है। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, यूहन्ना 3:16, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर फिर से विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। यहाँ, अनन्त जीवन नाश होने के विपरीत है।

यह विनाश की भाषा है, जिसे हम विनाश की शब्दावली कहते हैं। जो शास्त्रों में अंततः नरक की पीड़ा की बात करता है। प्रभु और उनकी महिमा और आनंद से दूर एक शाश्वत सचेत दंड।

अब हम इस बात को स्पष्ट कर दें। परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार को दण्डित करे। वह उसके द्वारा संसार को बचाना चाहता है।

और जो विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो विश्वास नहीं करता, उस पर दण्ड की आज्ञा हो चुकी है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। जीवनदाता द्वारा अनन्त जीवन दान के रूप में दिया जाता है।

पिता के प्रतिनिधि के रूप में देहधारण से पहले भी। यूहन्ना 1:3 और 4. अब वह देहधारी है, और वह जीवन लाता है।

यूहन्ना 3, आखिरी दो आयतें। पिता पुत्र से प्रेम करता है और उसने सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया है। जो कोई पुत्र पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन मिलता है।

यह विश्वासियों का वर्तमान अधिकार है। जो कोई पुत्र की आज्ञा नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा। परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है।

यहाँ यह साकार परलोक विद्या है। जीवन और, हाँ, मृत्यु का पहले से ही आयाम। यह मृत्यु का नहीं बल्कि क्रोध का उपयोग करता है।

जो कोई भी पुत्र पर विश्वास करता है, पिता पुत्र से प्रेम करता है और उसने सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया है। पॉलिन भाषा का प्रयोग करें तो पुत्र प्रभु है।

यूहन्ना भी इसका इस्तेमाल करता है, लेकिन पौलुस इसका ज़्यादा इस्तेमाल करता है। यह यूहन्ना 17:1 और 2 जैसा है। आपने उसे सभी प्राणियों पर अधिकार दिया है। यह आयत 35 है।

पिता पुत्र से प्रेम करता है और उसने सब कुछ उसके हाथ में सौंप दिया है। और 17:1 और 2 के विपरीत, जो पुत्र के सार्वभौमिक प्रभुत्व से चुनाव तक जाता है। यहाँ, पुत्र के सार्वभौमिक प्रभुत्व के बाद विश्वास और अविश्वास आता है।

फिर से, हमें सिखाते हुए कि हमें बाइबल की शिक्षाओं को तनाव में रखना चाहिए। संतुलन में, बेहतर शब्द की कमी के कारण। जो कोई भी पुत्र पर विश्वास करता है, उसके पास अब अनन्त जीवन है।

ओह, वह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में इसे और भी पूर्ण रूप से प्राप्त करेगा। यह जॉन का उच्चारण नहीं है। वास्तव में, जब आप इसे देखते हैं, इसे पाते हैं, तो आप कहते हैं, आह, यह वहाँ है।

क्योंकि ज़्यादातर समय, दस में से नौ बार, अनन्त जीवन। ज़्यादातर बार इसे अनन्त जीवन कहा जाता है, कभी-कभी इसे जीवन भी कहा जाता है।

एक ही वास्तविकता का उल्लेख करते हुए। हालाँकि विशेषण के साथ शाश्वत अधिक प्रचलित है। लेकिन उन दोनों का अर्थ शाश्वत जीवन है।

कभी-कभी, जॉन संक्षिप्त जीवन का उपयोग करता है। जो कोई भी पुत्र पर विश्वास करता है, उसके पास अब अनन्त जीवन है। जो कोई भी पुत्र की आज्ञा नहीं मानता, अवज्ञा विश्वास के समानांतर है।

जैसा कि मैंने पहले कहा, क्योंकि सुसमाचार एक आदेश है। और सुसमाचार का पालन करना विश्वास करना है। सुसमाचार की अवज्ञा करना सुसमाचार को अस्वीकार करना है।

पुत्र की आज्ञा नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा। न तो अभी, न ही आने वाले युग में।

जीवन सिर्फ अस्तित्व में रहना नहीं है। हर इंसान हमेशा के लिए अस्तित्व में रहेगा। जीवन है, यूहन्ना 17:3, पिता और पुत्र को जानना।

जीवन का अर्थ है अपने भीतर परमेश्वर का जीवन होना। जो कोई पुत्र की आज्ञा नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा। परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है।

हम क्रोध को नरक से जुड़ा एक भविष्यवादी विचार मानते हैं। ऐसा ही है, लेकिन एक बार फिर, चौथा सुसमाचार युगांतशास्त्र है। इसमें से कुछ तथाकथित सुसंगत युगांतशास्त्र है।

यह भविष्य की बात है। नई धरती पर पुनर्जीवित धर्मी लोगों के लिए अनंत जीवन का अंतिम चरण है। परमेश्वर के क्रोध का अंतिम चरण है जहाँ लोगों को अनंत आग में, नरक में, आग की झील में, दूसरी मृत्यु में, गेहेन्ना में डाला गया।

पुत्र पर विश्वास नहीं करता है, वह पहले से ही दोषी ठहराया जा चुका है, यूहन्ना 3.18. और यहाँ अध्याय में आगे, महान विरोधाभास दिया गया है। पुत्र में विश्वास करने वाले अभी और हमेशा के लिए अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं। यह अनन्त जीवन है।

यह हमेशा के लिए रहता है। अविश्वासी लोग न तो अभी और न ही हमेशा के लिए अनंत जीवन देख सकते हैं। बल्कि, परमेश्वर का क्रोध उन पर बना रहता है।

मैं इसे परमेश्वर की दयालुता के रूप में देखता हूँ कि वह पापियों को आने वाले क्रोध के बारे में चेतावनी दे रहा है। हालाँकि यूहन्ना में, आने वाला क्रोध पहले ही आ चुका है। लेकिन यह एक बड़े अनन्त क्रोध का अग्रदूत है, बेशक, जो परमेश्वर की भलाई है।

अगर वह लोगों से कहता कि सब कुछ ठीक है, जबकि सब कुछ ठीक नहीं था, तो यह अच्छा नहीं होता। जैसा कि लूथर हमें याद दिलाता है, उसने सिखाया कि अच्छी खबर को समझने के लिए बुरी खबर जरूरी है। काकांगेलियन, ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से, यूएंगेलियन, अच्छे संदेश, अच्छी खबर को समझने के लिए एक प्रस्तावना है।

हम अध्याय 4 में कुएँ पर बैठी महिला के साथ अनन्त जीवन को देखते हैं। फिर से, अध्याय 3 और 4 के बीच की महान विडंबना को न भूलें। अध्याय 3, कोई भी यहूदी उम्मीद करेगा, निकोडेमस,

क्या तुम मजाक कर रहे हो? एक यहूदी आदमी, फरीसी, महासभा का सदस्य और इज़राइल में एक प्रसिद्ध शिक्षक। यह आदमी पहले से ही परमेश्वर के राज्य में है।

नहीं? ओह, तो वह ठीक इसके मुहाने पर है। हे भगवान। यीशु कहते हैं कि वह परमेश्वर के राज्य से बहुत दूर है और उसे एबीसी भी समझ में नहीं आता।

वास्तव में, जब वह नए जन्म के बारे में सुनता है, तो वह अपनी माँ के गर्भ में फिर से प्रवेश करने जैसी अपमानजनक बातों के बारे में बात कर रहा होता है। और फिर अध्याय 4, हे भगवान। अगर कभी कोई आत्मा दया करने लायक थी, तो यह उचित या अच्छा या न्यायसंगत नहीं है, लेकिन पहली सदी के फिलिस्तीनी जीवन में महिलाओं को अपमानित किया जाता था।

और सामरी स्त्री? क्या तुम मजाक कर रहे हो? शिष्यों को वाकई आश्चर्य हुआ कि रब्बी यीशु सार्वजनिक रूप से एक स्त्री से बात कर रहे थे, एक सामरी स्त्री से तो बात ही छोड़ो। और अगर उन्हें उसकी पृष्ठभूमि पता होती, तो वे अपने साथ लाए हुए भोजन को गिरा देते। वह एक स्त्री थी, एक सामरी, इस्राएल की नज़र में तिरस्कृत जाति।

और वह भी बदनाम। यीशु कहते हैं, 18 साल तक तुम्हारे पाँच पति रहे हैं, और जो तुम्हारे पास है वह तुम्हारा पति नहीं है। किसी ने उसे यह नहीं बताया।

तो, मुझे लगता है कि आप एक भविष्यवक्ता हैं। और वह जल्दी से पूजा स्थल पर धार्मिक प्रश्न पर चली जाती है। लेकिन वह ईमानदार है।

वाह। वह अपने छठे आदमी पर काम कर रही है। पहली सदी में यह प्रचलन में नहीं है, चाहे आप कहीं भी रहते हों।

हे भगवान। कितना अप्रत्याशित। महान फरीसी, महासभा सदस्य, शिक्षक और इस्राएली।

भगवान जानता है कि अभिमानी को कैसे नम्र बनाया जाए। और वह जानता है कि नम्र को कैसे ऊपर उठाया जाए, जैसा कि कहावत है। जैसा कि मैरी ने अपनी मैग्निफिकेट में कहा है।

क्या वह जानता है कि कैसे? जेम्स और 1 पीटर दोनों। परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, लेकिन वह नम्र लोगों को अनुग्रह देता है। यह एक पुराने नियम का विचार है।

मेरे दिमाग में इसका संदर्भ नहीं है। लेकिन जेम्स, जो पुराने नियम का ईसाई है, निश्चित रूप से इसे जानता है। परमेश्वर अभिमानियों को नम्र करता है और दीनों को ऊँचा उठाता है।

इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए, क्योंकि वह तुम्हारा ध्यान रखता है। वैसे ही हे जवानो, 1 पतरस 4:5, प्राचीनों के आधीन रहो।

तुम सब एक दूसरे के प्रति नम्रता से पेश आओ। क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है और नम्र लोगों पर अनुग्रह करता है। मैं जानता हूँ कि यह पुराने नियम से पहले की बात है।

मैं इसे जल्दी से नहीं समझ पाता। इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए, और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि वह तुम्हारा ध्यान रखता है। परमेश्वर निकुदेमुस को दीन करता है।

और अगर यह कहने का उचित तरीका है तो निकुदेमुस को श्रेय दें क्योंकि उसने सुना। वह नम्र था। उसने अध्याय 7 में यीशु का बचाव किया और अध्याय 19 में यीशु के क्रूस पर चढ़ाए गए शरीर की देखभाल के लिए समय और पैसा दिया।

वह नम्र हो गया। सामरी महिला, वह शुरू से ही इससे अधिक विनम्र नहीं हो सकती थी। वह एक महिला प्रचारक के रूप में सामने आती है, शहर के पुरुष यीशु को सुनने के लिए दौड़ पड़ते हैं।

वे यीशु को सुनने के लिए उमड़ पड़े, क्योंकि उसने कहा, आओ एक ऐसे आदमी को सुनो जिसने मुझे वह सब कुछ बताया जो मैंने कभी किया था। दुर्भाग्य से, वे ठीक से जानते थे कि इसका क्या मतलब है। और उसके प्रयासों के कारण, उन्होंने कहा, अब हम जानते हैं कि यह आदमी दुनिया का उद्धारकर्ता है।

यह इतना उन्नत है कि हम इसे इस्राएल में या किसी भी सुसमाचार में नहीं पाते। परमेश्वर के पास हास्य की भावना है। वह यह नहीं कह रहा है कि यूहन्ना कुछ बना रहा है।

लेकिन अब हम विश्वास करते हैं, सिर्फ इसलिए नहीं कि तुमने क्या कहा, बल्कि हमने खुद सुना है, और हम जानते हैं कि यह वास्तव में दुनिया का उद्धारकर्ता है। परमेश्वर द्वारा नम्र लोगों को ऊपर उठाने के इस संदर्भ में, हमारे पास श्लोक 14 है। उसने उससे पानी माँगा।

वह इस पर यकीन नहीं कर सकती। यह कैसे हो सकता है कि तुम, एक यहूदी, मुझसे, एक सामरिया की औरत से पानी मांग रहे हो? अगर तुम भगवान के उपहार को जानते, 410, और वह कौन है जो तुमसे कह रहा है, मुझे पानी पिलाओ, तो तुम उससे मांगते, और वह तुम्हें जीवन का पानी, दोहरा अर्थ वाला, बहता हुआ पानी देता। आह, यह अच्छा लगता है।

यह बहुत बड़ी परेशानी है। मुझे अब यहाँ आने की ज़रूरत नहीं है। मुझे यह दे दो, सर।

यह बहुत सुविधाजनक होगा। सबसे पहले तो वह कहती है, यह पानी कहां से लाओगे? तुम्हारे पास तो बाल्टी भी नहीं है। मुझे समझ नहीं आता।

आप बिना बाल्टी के कुँए से पानी कैसे निकालेंगे? जॉन द्वारा इस्तेमाल किए गए प्रतीकात्मक अर्थ को याद रखें। रोटी, पानी, रोशनी। सर, मुझे यह पानी दीजिए, श्लोक 15 ताकि मुझे प्यास न लगे या पानी भरने के लिए यहाँ न आना पड़े।

वह पति का सौदा करता है। वह स्वीकार करती है और कहती है कि माउंट गेरिज़िम वह जगह है जहाँ आपको पूजा करनी चाहिए। हम ऐसा ही सोचते हैं।

आप गलत हैं। मुक्ति यहूदियों की है। आपको यरूशलेम में पूजा करनी चाहिए, लेकिन अभी मैं पहले से ही इसे रद्द कर रहा हूँ।

हे भगवान। यह अविश्वसनीय है। लेकिन हमारी चिंता 4:14 है।

जो कोई भी पीता है, अगर तुम याकूब के कुएँ से इस पानी को पीते हो, तो तुम्हें फिर से प्यास लगेगी। बेशक। लेकिन जो कोई भी उस पानी को पीता है जो मैं उसे दूँगा, आध्यात्मिक पानी, उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी।

मैं उसे जो पानी दूँगा, वह उसके अंदर पानी का झरना बन जाएगा। यही तो वह चाहती थी। लेकिन यह एक प्रतीकात्मक, आध्यात्मिक जल का झरना है जो अनंत जीवन की ओर बढ़ रहा है।

मैंने आपको पहले ही बताया था, मेरे लिए यह जानना मुश्किल है। मुझे यकीन है कि पवित्र आत्मा और अनन्त जीवन दोनों ही इसमें शामिल हैं। क्या पानी ही अनन्त जीवन है? क्या पानी पवित्र आत्मा है जो अनन्त जीवन उत्पन्न करता है? मैं दरवाज़ा नंबर दो के लिए वोट करूँगा, लेकिन मुझे यकीन नहीं है।

मुख्य बात यह है कि आत्मा का नाम लिए बिना, मुझे लगता है कि आत्मा के बारे में भ्रम है। और निश्चित रूप से अनंत जीवन है। यीशु अनंत जीवन देने वाला है।

यहाँ तक कि सामरी व्यभिचारी स्त्रियों को भी जो विश्वास करती हैं और अपना हृदय उसके प्रति खोलती हैं। 5:21. जैसे पिता मरे हुआँ को उठाता और उन्हें जिलाता है, वैसे ही पुत्र भी जिलाता है।

एक सीधा कथन है कि बेटा जीवनदाता है। जैसे पिता मृतकों को जीवित करता है, यह एक दिव्य कार्य है, यदि कभी कोई था, और उन्हें जीवन देता है, क्या यह पुनर्जन्म या पुनरुत्थान है? मैं तत्काल संदर्भ में पुनर्जन्म का सुझाव देने जा रहा हूँ। बेशक, दोनों सत्य हैं।

इसी तरह बेटा भी जिसे चाहे जीवन दे देता है। अरे यार। यह कोई चुनाव नहीं है।

यह बेटे द्वारा पुनर्जन्म है। बेटा अब उन लोगों को अनंत जीवन देता है, जिन्हें वह चाहता है। यह बेटे की संप्रभुता है।

पुत्र पर विश्वास करते हैं। अब यहाँ, जैसे पिता मरे हुआँ को जीवन देता है, वैसे ही पुत्र भी जिसे चाहे जीवन देता है। पिता किसी का न्याय नहीं करता, बल्कि उसने न्याय करने का सारा काम पुत्र को सौंप दिया है, ताकि वे पुत्र का भी वैसे ही आदर करें जैसे वे पिता का करते हैं।

यूहन्ना का सुसमाचार मसीह के ईश्वरत्व के बारे में बहुत स्पष्ट है, लगातार स्पष्ट है, बार-बार। 521 में स्पष्ट रूप से, पुत्र जीवन देता है। और हम इसे 24 में देखते हैं।

मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो कोई मेरा वचन सुनकर मुझ पर विश्वास करता है, वह मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है; यीशु ही परमेश्वर का प्रकटकर्ता है। यदि तुम उसका वचन सुनते हो और विश्वास करते हो, तो तुम स्वतः ही पिता पर विश्वास करते हो। जो व्यक्ति यीशु के वचन पर विश्वास करता है, उसके पास अनन्त जीवन है।

इसलिए, वह 6 में कह सका, मेरे शब्द आत्मा हैं और वे जीवन हैं। वे अनन्त जीवन का संदेश देते हैं, इसलिए वह इस तरह बात कर सका। उसके शब्द अनन्त जीवन हैं।

आह, यह एक लक्षणालंकार है। उनके शब्द अनन्त जीवन से बहुत निकटता से जुड़े हुए हैं। लक्षणालंकार एक अलंकार है जिसमें दो चीजें इतनी निकटता से जुड़ी होती हैं कि एक दूसरे के लिए खड़ी होती है।

अगर आप आज अखबार में पढ़ते हैं या कोई संदेश सुनते हैं, तो आप कहेंगे कि आज व्हाइट हाउस से कोई संदेश आया है, आप कहेंगे कि घर से? यहाँ क्या हो रहा है? घर की पेंटिंग? नहीं, आप कहेंगे कि, आह, इसका मतलब है कि यह कार्यालय से है। आप इसके बारे में सोच भी नहीं सकते क्योंकि संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति पद का कार्यालय व्हाइट हाउस से जुड़ा हुआ है। आप समझ जाएँगे कि यह राष्ट्रपति का संदेश है।

इसी प्रकार, जो कोई यीशु के वचन को सुनता है और पिता पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन मिलता है। उस पर न्याय नहीं किया जाता, बल्कि वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश कर चुका है। यीशु का जीवन देने वाला वचन, जीवन देने वाले का जीवन देने वाला वचन, पुनर्जन्म न पाए हुए मनुष्यों को पुनर्जीवित करता है।

वाह! मैं तुमसे सच कहता हूँ, वह घड़ी आ रही है और अब आ चुकी है। वह पहले से ही है।

जब मृतक परमेश्वर के पुत्र की आवाज़ सुनेंगे, तो जो सुनेंगे वे जीवित हो जाएँगे। क्योंकि पिता के पास स्वयं में जीवन है। यह परमेश्वर के परमेश्वर होने का एक हिस्सा है।

तो उसने अपने बेटे को भी जीवन दिया है। आप इसे नोट कर सकते हैं। मैं यहाँ डीए कार्सन से असहमत हूँ।

वह निश्चित रूप से अपने लेखन के कारण मेरे शिक्षक हैं। उनका मानना है कि यह पुत्र की शाश्वत पीढ़ी का कथन है। मैं इस धारणा से इनकार नहीं करता कि ईश्वर हमेशा से पुत्र का पिता रहा है और पुत्र हमेशा से पिता का पुत्र रहा है।

हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि यह अवतार-पूर्व अंतर-त्रिएक संबंधों के बारे में बात कर रहा है। मुझे लगता है कि यह यहाँ अवतार व्यवसाय के बारे में बात कर रहा है। चूँकि पिता में स्वयं जीवन है, इसलिए स्वाभाविक रूप से, परमेश्वर पिता जीवित परमेश्वर है।

इसलिए उसने अपने अंदर जीवन रखने के लिए देहधारी पुत्र को अनुमति दी है। उसने आत्मा के द्वारा योजना बनाई और उसे क्रियान्वित किया। शाश्वत पुत्र का अवतार।

ताकि यह मनुष्य, यीशु, अपने आप में अनन्त जीवन पाए और दूसरों को जीवन देने वाला हो। और इसीलिए उसे न्याय करने का अधिकार है। पिता ने उसे यह अधिकार दिया है।

और जैसा कि हमने अभी पढ़ा, पिता ने सारा न्याय पुत्र को सौंप दिया है। इस पर आश्चर्य मत करो। अभी आध्यात्मिक पुनरुत्थान पर आश्चर्य मत करो क्योंकि वह समय आ रहा है जब शाब्दिक, शारीरिक पुनरुत्थान होने वाला है।

और वह मनुष्य के बेटे की आवाज़ भी होगी। इसलिए, वे सही कह रहे हैं कि यीशु बहुत स्पष्ट थे। उन्होंने कहा, लाज़र, आगे आओ।

वह नहीं चाहता था कि बहुत सारे लोग आकर उसे जिलाएँ। वह नहीं चाहता था कि पूरा कब्रिस्तान खाली हो जाए, ऐसा कहा जा सकता है। यीशु अनंत जीवन देने वाला है।

यदि आप चाहें तो वह शाश्वत जीवन का अवतार है। और उसके वचन पर, जो लोग आध्यात्मिक रूप से मृत हैं वे आध्यात्मिक मृत्यु से आध्यात्मिक जीवन की ओर बढ़ते हैं। वे पुनर्जीवित होते हैं।

वे फिर से जन्म लेते हैं। वे परमेश्वर से जन्म लेते हैं। उन्हें नश्वर शरीर में अनन्त जीवन मिलता है, पॉलिन भाषा में अब।

और एक दिन, हमें अमर शरीर में अनंत जीवन मिलेगा जब पुत्र अपनी आवाज़ से उन्हें बाकी सभी मृतकों, धर्मी और अधर्मी लोगों के साथ जीवित कर देगा। हम 17, यूहन्ना 17 पर वापस आ गए हैं। बेशक, वहाँ अनंत जीवन है।

मुझे लगता है कि आप प्रस्तावना का उपयोग करके और वहाँ से विषयों का पता लगाकर यूहन्ना के सुसमाचार पर एक पूरा पाठ्यक्रम कर सकते हैं। मुझे लगता है कि आप यूहन्ना 17 और उससे पहले के विषयों और उससे आने वाले विषयों का उपयोग करके यूहन्ना के सुसमाचार पर एक पूरा पाठ्यक्रम कर सकते हैं। 17, दो और तीन, जब यीशु ने ये शब्द कहे, तो उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाई और कहा, पिता, वह समय आ गया है।

अपने बेटे की महिमा करो ताकि तुम्हारा बेटा तुम्हारी महिमा करे। पिता और बेटे की आपसी महिमा और हाँ, आत्मा की, हालाँकि वह इसे उतना नहीं कहता, क्योंकि आपने उसे सभी प्राणियों पर अधिकार दिया है, क्यों? ताकि वह उन सभी को अनन्त जीवन दे सके जिन्हें आपने उसे दिया है। ओह, एक मिनट रुको।

अगर वे चुने हुए हैं, तो क्या उनके पास पहले से ही अनंत जीवन नहीं है? नहीं, उन्हें सिर्फ़ इसके लिए चुना गया था। जैसा कि सामरी लोग हमें सिखाते हैं, परमेश्वर ने अपने बेटे को दुनिया का उद्धारकर्ता नियुक्त किया।

यूहन्ना 4, और पुत्र जीवनदाता है। वह अनन्त जीवन देता है; मैं इसे दो तरह से कहूँगा: जो कोई भी उस पर विश्वास करता है, यह सच है। वह उन लोगों को भी अनन्त जीवन देता है जिन्हें पिता ने उसे दिया है, और किसी तरह, वह यह जानने के ज्ञान को संभाल सकता है कि कौन विश्वास करेगा और कौन नहीं। मुझे खुशी है कि वह इसे संभाल सकता है क्योंकि मुझे नहीं पता कि वह इसे कैसे संभाल सकता है, लेकिन मुझे विश्वास है, वास्तव में, उसने इसे काफी अच्छी तरह से संभाला।

ओह! उन पहले कुछ छंदों में अद्भुत विषय जुड़े हुए हैं, और यही अनंत जीवन है। इसे हमारे लिए परिभाषित किया गया है।

सच में? हाँ। व्यापक रूप से? नहीं, यह बहुत बड़ा है। यह अनंत जीवन है।

यह अवधारणा बहुत बड़ी है। वे आपको, एकमात्र सच्चे परमेश्वर को जानते हैं, और वे यीशु मसीह को जानते हैं जिन्हें आपने भेजा है। अनन्त जीवन पिता और पुत्र को जानना है।

एक पल रुकिए। क्या यह श्लोक पंथों के लिए नहीं है? यह पिता को सच्चा परमेश्वर कहता है और यह नहीं कहता कि पुत्र का परमेश्वर उसे सच्चे परमेश्वर से अलग करता है। यह सच है, लेकिन इस पर ध्यान दें। अनंत जीवन का अर्थ केवल पिता को जानना नहीं है, बल्कि पुत्र को जानना भी है।

इसलिए, पुत्र पिता के बराबर है। सच्चा ईश्वर पुत्र को, पिता को प्रथम व्यक्ति के रूप में प्रमुखता देता है, जैसा कि हम कहते हैं। आखिरकार, आत्मा अवतार नहीं बनी, केवल पुत्र, और पिता नहीं बने, केवल पुत्र ही बने, और अवतार में एक अनिवार्य नहीं, बल्कि एक आर्थिक या कार्यात्मक अधीनता है।

अनन्त जीवन का अर्थ है पिता और पुत्र को जानना। कब? अभी। यानी, अनन्त जीवन सम्बन्धों पर आधारित है।

यानी यह सिर्फ मात्रात्मक नहीं है। शाश्वत मृत्यु भी मात्रात्मक है। मनुष्य हमेशा के लिए रहता है।

लेकिन यह गुणात्मक भी है। अनंत जीवन को संबंधात्मक रूप से परिभाषित किया जाता है। यह ईश्वर को जानना है।

बाइबल सिखाती है कि धर्म है। और सिर्फ यह मत कहिए कि मेरे पास धर्म नहीं है, मेरे पास एक रिश्ता है। जेम्स 1 में धर्म शब्द का इस्तेमाल नकारात्मक और झूठे धर्म दोनों तरह से किया गया है।

वह धर्म किस काम का? और सच्चा, सच्चा धर्म और ईश्वर और पिता के सामने पिता यही है। विधवाओं और अनाथों से उनके संकट में मिलना और खुद को दुनिया से दूर रखना। लेकिन ईसाई जीवन, यह है। धर्म है।

धार्मिक कार्य और प्रार्थना करना और उठना-बैठना और भजन गाना और परमेश्वर के वचन को सुनना और प्रभु भोज ग्रहण करना। यह सब धर्म है। यह बाइबल में इससे कहीं ज़्यादा है।

परंपरागत रूप से, हम बाइबिल के अनुसार नहीं, बल्कि परंपरागत रूप से धर्मशास्त्र के बीच अंतर करते हैं, जो ईसाई शिक्षण से संबंधित है, और धर्म, जो ईसाई अभ्यास से संबंधित है। यहाँ, उन दोनों में पिता, पुत्र और निश्चित रूप से पवित्र आत्मा को जानना शामिल है। हम इस व्याख्यान का समापन उद्देश्य कथन के साथ करते हैं।

यूहन्ना की गिनती के अनुसार यीशु ने दिखाया कि वह तीन बार जीवित था। इसका मतलब यह नहीं है कि वह केवल तीन बार प्रकट हुआ था। लेकिन यूहन्ना ने तीन बार गिनती की और यह सच है कि वह तीन बार प्रकट हुआ।

यह नहीं कहा गया है कि वह केवल तीन बार अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुआ। विशेष रूप से, उद्देश्य कथन थॉमस के प्रकट होने, संदेह करने वाले थॉमस के बाद आता है। मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर जॉन 20, 28 थॉमस कहते हैं।

यीशु ने उससे कहा, "क्या तूने मुझे देखकर विश्वास किया है? धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया। अब यीशु ने अपने शिष्यों की उपस्थिति में और भी कई चिह्न दिखाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। यूहन्ना के सुसमाचार का सबसे अंतिम पद अतिशयोक्तिपूर्ण है।

यह एक अतिशयोक्ति है। अब यीशु ने और भी बहुत सी बातें कहीं, जिनमें से हर एक को लिखा जाना था। मेरा मानना है कि दुनिया में इतनी किताबें नहीं हो सकतीं जो लिखी जाएँ। यह पवित्र अतिशयोक्ति है।

यह एक पवित्र अतिशयोक्ति है। एक पल रुकिए। क्या यह सच नहीं है कि बेटा शाश्वत है? हाँ।

और इसलिए आप यह नहीं गिन सकते कि उसने अनंत काल में क्या किया। हाँ। लेकिन यह आयत अनंत काल के बारे में बात नहीं कर रही है।

यह अर्थव्यवस्था के बारे में बात कर रहा है। यह अवतारी पुत्र के बारे में बात कर रहा है। और यह संकेतों के अलावा कई अन्य बातें भी नहीं कहता।

हाँ, अनगिनत चीज़ें, लेकिन एक सीमित संख्या। यूहन्ना का मतलब है कि परमेश्वर के पुत्र ने कई अद्भुत काम किए। 20:30 के लिए भी यही बात लागू होती है।

यीशु ने यूहन्ना द्वारा दर्ज किए गए 7 :8 या 9 के अलावा कई अन्य चिह्न दिखाए। कोस्टेनबर्गर को पढ़ते हुए मैं सोच रहा हूँ कि शायद पुनरुत्थान कोई चिह्न नहीं है, बल्कि वह तत्व है जिसकी ओर यीशु का पुनरुत्थान है, लेकिन वह तत्व जिसकी ओर अन्य चिह्न इशारा करते हैं। जो बात मुझे चौंकाती है वह है अध्याय 2। आप कौन सा चिह्न दिखाते हैं कि आपके पास मंदिर को शुद्ध करने का अधिकार है? और फिर तुरंत यीशु अपने पुनरुत्थान की भविष्यवाणी करते हैं।

तो, मुझे नहीं पता और जब मैंने पहले यह पढ़ाया था तो मैंने कहा था कि मुझे यकीन नहीं है। तो, अब मैं और भी अनिश्चित हूँ क्योंकि कोस्टेनबर्गर कहते हैं कि ये सभी दिग्गज मानते हैं कि पुनरुत्थान ही वास्तविकता है जिसकी ओर संकेत मिलते हैं।

आखिर, संकेत क्या है? यह वास्तविकता नहीं है। यह एक पीड़ा है। इसलिए, मैं अब 60% विश्वास करूँगा कि यह सही है, और मैं अध्याय 2 में संकेत के लिए उस संकेत अनुरोध को निगल जाऊँगा, और मैं क्या महत्वपूर्ण नहीं हूँ?

यीशु ने अपने शिष्यों की उपस्थिति में कई अन्य चिन्ह दिखाए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। यूहन्ना ने चयनात्मकता बरती है। सुसमाचार लेखक इतिहासकार हैं।

जॉन कोई कहानी नहीं बना रहा है, लेकिन उसके पास चुनने के लिए बहुत सी बातें थीं। यीशु ने जो कहा और किया, उसके बारे में सोचने के लिए उसके पास मत्ती, मरकुस और लूका से कहीं ज्यादा समय था। और वह हमारे सामने जॉन का सुसमाचार प्रस्तुत करता है, जिसकी तुलना एक नदी से की जा सकती है, और वास्तव में छोटे बच्चे इस नदी में खेल सकते हैं और बहुत सारी अच्छी चीजें प्राप्त कर सकते हैं और खूब मौज-मस्ती कर सकते हैं, लेकिन भगवान के लिए, हाथी इस नदी में तैर सकते हैं और उन्हें सावधान रहना चाहिए कि वे डूब न जाएँ।

ये संकेत इसलिए लिखे गए हैं ताकि आप विश्वास कर सकें। चमत्कार कई बार लिखे और चुने गए हैं, उपदेशों के साथ संयुक्त। मैं कभी नहीं कह रहा हूँ कि जॉन कुछ भी बनाकर रचनात्मक रूप से गलत हो रहा है।

वह पहले तीन सुसमाचार लेखकों की तुलना में अधिक गहराई से सोचता है। उसके पास समय है। वह उन बातों को एक साथ रखता है जिनका उल्लेख कई बार उन्होंने किया ही नहीं।

वे यीशु की तत्काल कहानी से बहुत अभिभूत थे। ये इसलिए लिखे गए हैं ताकि आप किस बात पर विश्वास कर सकें? कि यीशु मरियम और यूसुफ का पुत्र मसीह है, अभिषिक्त व्यक्ति, मसीहा, इस्राएल का वादा किया हुआ व्यक्ति। परमेश्वर का पुत्र, इस्राएल का दिव्य मानव शासक राजा और विश्वास करके आप अनुमान लगा सकते हैं कि उसके नाम में क्या जीवन है।

इस प्रकार एक बड़ा समावेश है, एक बड़ा समावेश भाषा की उसी विशेषता को दर्शाता है। वास्तव में, जॉन 1:3 और 20:30 1 में एक ही शब्द जीवन है। याद रखें, अध्याय विभाजन प्रेरित नहीं हैं। हमारे अगले व्याख्यानों में, हम आगे बढ़ेंगे और, भगवान की इच्छा से, अभी भी उद्धार के बारे में सोचते हुए समाप्त करेंगे, लेकिन अब, पिता द्वारा लोगों को यीशु की ओर आकर्षित करने, पुत्र द्वारा लोगों को मृतकों में से जीवित करने, पुत्र द्वारा लोगों को बचाए रखने के संदर्भ में, और हम, भगवान की इच्छा से, पहले से ही और अभी तक नहीं के साथ निष्कर्ष निकालेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन जोहानिन थियोलॉजी पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 18 है, उद्धार, अनन्त जीवन।